प्रातः क्लास 26-12-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप पहले बच्चों को कहते हैं यह भूल तो नहीं जाते हो हम बाप के आगे टीचर के आगे और सुप्रीम गुरु के आगे भी बैठे हुये हैं। बाबा नहीं समझते हैं कि सभी कोई इस याद में बैठते हैं। फिर भी बाप का फर्ज है समझाना। यह है रथ सहित याद करना। हमारा बाबा बेहद का बाप भी है, टीचर भी है। और बेहद हमारा सद्गुरु भी है। जो बच्चों को साथ में भी ले जावेंगे। बाप आये ही हैं बच्चों को श्रृंगार कराने। पवित्रता का भी श्रृंगार कराने आते हैं। धन भी अथाह देते हैं। धन देते ही हैं नई दुनिया के लिये जहां तुम को जाना है। यह बच्चों को याद करना है। बच्चे गफलत करते हैं जो भूल जाते हैं। वह जो पूरी खुशी होनी चाहिए वह कम होती जाती है। ऐसा बाप तो कब मिलता ही नहीं। तुम जानते हो हम बाबा के बच्चे जरूर हैं। वह हमको पढ़ाते भी हैं इसलिये टीचर भी जरूर है। हमारी पढ़ाई है ही नई दुनिया अमरपुरी के लिये। अभी हम संगम युग पर बैठे हैं। यह याद तो जरूर बच्चों को होनी चाहिए। पक्का2 याद करना है। यह भी जानते हो इस समय कंसपुरी आसुरी दुनिया में हैं। समझो कोई को सा० होता है परन्तु सा० से कोई कृष्णपुरी उनकी डिनायस्टी में नहीं जा सकेंगे। कृष्ण की राजधानी में अन्दर ही नहीं जा सकते हैं। जा तब सकेंगे जब बाप टीचर गुरु तीनों को याद करते रहेंगे। यह आत्माओं से बात की जाती है। आत्मा ही कहती है हां बाबा। बाबा आप तो सच्च कहते हो। बाप भी हो, आप पढ़ाने वाले टीचर भी हो। सुप्रीम आत्मा पढ़ाती है। लौकिक पढ़ाई भी आत्मा ही शरीर साथ पढ़ती है। परन्तु वह आत्मा भी पतित तो शरीर भी पतित है। दुनिया के मनुष्यों को यह पता नहीं है कि हम नर्कवासी हैं। नर्क, विषय वैतरणी नदी गटर में पड़े हैं। अभी तुम समझते हो हम तो अभी चले अपनी वतन। यह तुम्हारा वतन नहीं है। यह है रावण का पराया वतन। तुम्हारे वतन में तो अथाह सुख है। कांग्रेस लोग ऐसे नहीं समझते हम पराये राज्य में हैं। आगे मुसलमानों के राज्य में बैठे थे। फिर क्रिश्चन के राज्य में बैठे। अभी तुम जानते हो हम अपने राज्य में जाते हैं। आगे रावण राज्य को हम अपना राज्य समझ बैठे थे। यह भूल गये हैं पहले हम स्वर्ग= रामराज्य में थे। फिर 84 के चक्र में आने से रावण राज्य में दुःख में आकर पड़े हैं। पुराने राज्य में तो दुःख ही दुःख है। यह सारा ज्ञान अन्दर में आना चाहिए। बाप तो जरूर याद आवेंगा। परन्तु तीनों को याद करना है। यह नॉलेज= नालेज भी मनुष्य ही ले सकते हैं। जानवर तो नहीं पढ़ेंगे। यह भी तुम बच्चे समझते हो वहां कोई फैक्टर्स आदि की पढ़ाई नहीं होती। बाप यहां ही तुमको माला माल कर देते हैं। सभी तो राजाएं नहीं बनते। व्यापार भी चलता होगा परन्तु वहां तुमको अथाह धन रहता है। घाटा आदि होने का कायदा ही नहीं। लूट मार आदि वहां होती ही नहीं। नाम ही है स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है हम स्वर्ग में थे। फिर पुनर्जन्म लेते नीचे उतरते हैं। बाप कहानी भी इन्हों की ही बैठे बताते हैं। 84 जन्म नहीं लिये होंगे तो माया हरा देगी। यह भी बाप समझाते रहते हैं। माया का कितना बड़ा तूफान है। बहुतों को माया हराने की कोशिश करती है। आगे चल तुम बहुत देखेंगे। सुनेंगे। बाबा के पास सभी के चित्र होते तो तो तुमको बन्दर दिखाते। यह फलाना इतना दिन आया बाप का बना फिर माया खा गई। मर गये। माया के हाथ जाकर मिले। यहां इस समय तुम शरीर छोड़ेंगे तो बाबा के साथ बेहद के घर में रहेंगे। वहां बाबा मम्मा बच्चे सभी हैं ना। परिवार ऐसा ही होता है। वहां बाप और भाई2 हैं। और कोई सम्बन्ध नहीं हैं। यहां बाप और भाई बहन हैं। फिर वृद्धि होती है तो चाचा काका मामा बहुत सम्बन्ध हो जाते हैं। इस संगम युग पर तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बनते हो तो भाई भाई बैन हो। शिव बाबा को याद करते हो तो भाई2 हो। बहुत बच्चे भूल जाते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं। बाप का फर्ज है बच्चों को सिर पर उठाना। तबतो नमस्ते2 करते रहते हैं। अर्थ भी समझाते हैं। भक्ति करने वाले साधु सन्त आदि कोई भी तुमको जीवन्मुक्ति के लिये ही पुरुषार्थ करते हैं। वह है ही निवृति मार्ग वाले। वह राजयोग कैसे सिखावेंगे। राजयोग है ही प्रवृति मार्ग का। प्रजापिता ब्रह्मा को 4भुजाएं देते हैं तो प्रवृति मार्ग हुआ ना। यहां बाप ने इन्हों को एडाप्ट

किया है तो नाम रखा है ब्रह्मा और सरस्वती। शास्त्रों में दिखाते हैं ब्रह्मा सरस्वती के पीछे फिदा हुआ। शंकर पार्वती के पीछे फिदा हुआ, नारायण लक्ष्मी के पिछाड़ी फिदा हुआ, राधे और कृष्ण तो भाई बहन थे। फिर स्त्री पुरुष बने। तो तुम समझते हो फिदा हुये। कितनी ग्लानी लिख दी है। ब्रह्मा तो बाप ठहरा। बाप बच्चों पर कैसे फिदा होगा। सो भी बूढ़ा बाप। ड्रामा में नूंध देखो कैसी है। वानप्रस्त अवस्था में ही मनुष्य गुरु करते हैं। 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप टीचर गुरु बन गये। अभी तो कायदे भी बिगड़ गये हैं। छोटे बच्चे को भी गुरु करा देते हैं। कहते हैं नहीं तो बहुत बुरी हालत में मरेंगे। गुरु लोग फंसाते बहुत हैं। यह तो है ही निराकार। तुम्हारी आत्मा यह बाप भी करते हैं, टीचर भी बनते हैं, सद्गुरु भी बनते हैं। निराकारी दुनिया को कहा जाता है आत्माओं की दुनिया। ऐसे तो नहीं कहेंगे दुनिया ही नहीं है। शान्तिधाम कहा जाता है वहां आत्मायें रहती हैं। अगर कहे परमात्मा का नाम रूप देश काल नहीं तो आत्मा का फिर नाम रूप कहां से आवेगा। कितने बेसमझ बन गये हैं। एकदम जंगल में रहने वाले बन्दर हैं। इसलिये इनको कांटों का जंगल कहा जाता है। यह भी कोई की बुधि नहीं चलती बाप नाम रूप से न्यारा है तो बच्चे फिर कहांसे आवेंगे। तुम बच्चे अभी समझते हो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है। सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है। कोई नहीं जानते। देवी देवतायें क्षत्री की हिस्ट्री जागराफी कोई है नहीं। कहां तक यह राज्य करते हैं फिर उन्हों के बच्चे कैसे तख्त पर बैठते हैं। उनको कहा जाता है यह राज्य करते हैं हिस्ट्री जागराफी। हिस्ट्री चैतन्य की होती है जागराफी तो जड वस्त है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम कहां तक राज्य करते हैं। हिस्ट्री गाई जाती है। जिसको कहानी कहा जाता है। जागराफी रिहासित को कहा जाता है। चैतन्य ने राज्य किया जड़ तो राज्य नहीं करेंगे। कितने समय से फलाने का राज्य था। क्रिश्चन ने भारत पर कब से कब तक राज्य राज्य किया। तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी को कोई जानते ही नहीं। कहते हैं सतयुग को तो लाखों वर्ष हुआ। उसमें कौन राज्य कर के गये कितना समय राज्य किया यह कोई भी नहीं जानता। इनको कहा जाता है हिस्ट्री और जागराफी। हिस्ट्री चैतन्य की होती है, जागराफी जड़ की होती है। जड़ और चैतन्य का ही यह सारा खेल है। आत्मा चैतन्य है सत्य है आनन्द स्वरूप है। प्रकृति तो जड़ है। जड़ और चैतन्य का मिलकर शरीर बनता है। जड़ शरीर में आत्मा प्रवेश करती है तो उनको जीवात्मा कहा जाता है। आत्मा तो सदैव चैतन्य है। आत्मा जड़ शरीर में बैठ उनको चैतन्य बना देती है। तो इसको कहा जाता है जीवात्मा। इस शरीर को चलाने वाली आत्मा है। सारा खेल ही जड़ और चैतन्य का है। मनुष्य जीवन ही उत्तम गाया जाता है। आदमशुमारी भी मनुष्यों की गिनी जाती है। जानवरों की तो कोई भी गिनती कर न सके। सारा खेल तुम्हारे पर है। हिस्ट्री जागराफी भी तुम सुनते हो। बाप इसमें आकर तुमको सभी बातें सूक्ष्म समझाते हैं। इसको कहा जाता है वेहद की हिस्ट्री जागराफी। यह नालेज न होने कारण तुम कितने बेसमझ तमोप्रधान बन जाते हो। मनुष्य होकर और दुनिया के हिस्ट्री जागराफी को न जाने तो वह मनुष्य ही क्या काम का। अभी बाबा द्वारा तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी सुन रहे हो। यह पढ़ाई कितनी अच्छी है। कौन पढ़ाते हैं। बाप। बाप ही ऊंच ते ऊंच पद दिलाने वाला है। इन ल०ना० का ऊंच ते ऊंच पद है ना। और उनकी जो इन्हों के साथ स्वर्ग में रहते हैं। वहां बैरीस्टरी आदि तो करते ही नहीं वहां तो सिर्फ हुनर सिखना होता है। हुनर न सीखे तो मकान आदि कैसे बनावे। एक दो को हुनर सीखलाते हैं। उनको दर्जा नहीं कहा जाता सिखलाने का हुनर होता है। वह हुनर की सिखाई अलग होती है। वहां दर्जे आदि की बात ही नहीं। बाकी हुनर तो जरूर चाहिए ना। नहीं तो इतने मकान आदि कौन बनावे? आपे ही तो नहीं बन जावेंगे। यह सभी अभी तुम बच्चों की बुधि में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहती है। तुम जानते हो यह चक्र फिरता रहता है। इतना समय हम राज्य करते थे। फिर रावण के राज्य में आते हैं। दुनिया को इन बातों का पता थोड़ेही है कि हम रावण राज्य में हैं। कहते हैं हमको बाबा रावण के राज्य से

लिबरेट करो। कांग्रेस राज्य ने क्रिश्चन राज्य से अपने को लिबरेट किया। अभी फिर कहते हैं गाड फादर हमको लिबरेट करो। स्मृति आती है ना। कोई भी यह नहीं जानते कि ऐसे क्यों कहते हैं। अभी तुमने समझा है सारी सृष्टि पर ही रावण राज्य है। सभी कहते हैं रामराज्य चाहिए। तो लिबरेट कौन करेगा। यह किसको भी पता नहीं है। समझते हैं गाड फादर लिबरेट करगाईड बन ले जावेंगे। भारतवासियों को अ इतना भी अकल नहीं है। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान हैं। वह न इतना सुख, न इतना दुःख उठाते हैं। भारतवासी सभी से सुखी बनते हैं। तो सभी से दुःखी भी बने हैं। हिसाब है ना। अभी कितना दुःख है। रीलिजस माईन्डेड ही याद करते हैं। ओ गाड फादर, लिबरेटर। तुम्हारी भी दिल में हैवाना आकर हमारी दुःख करो और सुखधाम ले चलो। वह कहते हैं शान्तिधाम ले चलो। तुमकहेंगे सुखधाम ले चलो। अभी बाप आया हुआ है तो बहुत खुशी होनी चाहिए। वह है शंकराचार्य। और यह है शिवाचार्य। शंकराचार्य शास्त्र सुनावेंगे, वह है पुजारी। और यह है पूज्य बनाने वाला। उनको सद्गुरु कहा जाता है। सभी वेदों शास्त्रों आदि को जानते हैं। अब बाप कहते हैं यह जो शास्त्रों का भूसा बुधि में भरा हुआ है उनको निकालो। मैं जो सुनाऊं वह सुनो। इन भक्तिमार्ग के गुरुओं आदि सभी को छोड़ो। इन्होंने ने तुमको नीचे गिराया है। हम तुमको पार करते हैं। इन वेदों शास्त्रों आदिकी बातें न सुनो। वह लोग इन्हों को कितना मान देते हैं। मैं कहता हूं यह भूसा है भक्ति मार्ग में कनरस कितना है। इन में रीयल बात कुछ भी नहीं हैं। एकदम आटे में लून है। बाकी तो सभी हैं गपोड़े। कृष्ण राम सभी को ठोक देते हैं। चण्डीका देवी का भी मेला लगता है अभी चण्डीका कि= का फिर मेला क्यों लगता है। चण्डी किसको कहा जाता है। बाबा ने बताया है चण्डाल का जन्म भी ऐसी ब्रह्माकुमारियां ही लेती हैं। यहां रहं खा पी कर, कुछ देकर फिर कहते हैं हम ने जो दिया वह हमको दो। हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है ना। तो वह क्या जाकर ~~कर्मेगे~~= बनेंगे। ऐसे चण्डीका का भी मेला लगाता है। फिर सतयुगी तो बनते हैं ना। कुछ भी ~~समय~~ समय मददगार बने तो ~~से~~ स्वर्ग में गये। थोड़ी अंगुली भी दी ना। फिर माया ने डंस लिया माया की लड़ाई है ही तुम्हारे साथ। तुम युध के मैदान में हो। यह वह थोड़े ही जानते हैं। ज्ञान तो कोई के पास है नहीं। वह चित्रों वाली गीता है कितना पैसा कमाते हैं। आजकल चित्रों पर तो सभी आशुक होते हैं। इसको आर्ट समझते हैं। मनुष्यों को क्या पता देवताओं के चित्र कैसे होते हैं। देवताओं के चित्र तो यह है ना। इनकी तुम वंशावली देवी देवता हो। सिर्फ पतित बनने कारण धर्म भ्रष्ट कर्मभ्रष्ट बन गये हैं। तुम असल में कितने फर्स्ट क्लास थे। फिर क्या बन गये हो। इतना अंधा काला होता ही नहीं। देवताओं की नेचरल शोभा होती हैं। सतोप्रधान तत्वों से बना हुआ शरीर होता है ना। वहां तो नेचरल ब्युटी होती है। तो यह बाप यह सभी समझाकर फिर भी कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। बाप बाप भी है टीचर भी है सद्गुरु भी है। तीनों रूपों में याद करो। तो तीनों वरसे मिलेंगे। पिछाड़ी वाले तीनों रूपों में याद नहीं कर सकेंगे। फिर मुक्ति में चले जावेंगे। बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन,, यह तो है सा० की बातें। बाकी हिस्ट्री जागरफी सारी यहां की है। इनकी आयु का किसको भी पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कोई भी समझा सकते हो। पहले2 तो बाप का परिचय देना है। वह बेहद का बाप है सुप्रीम। लौकिक बाप को कबपरम वा ~~सुप्रीम~~ सुप्रीमआत्मा नहीं कहा जाता। सुप्रीम तो एक ही है। जिसको भगवान कहा जाता है। वह नालेजफुल है तो तुमको नालेज सिखलाते हैं। यह ईश्वरीय नालेज है सोर्स आफ इनकम। नालेज भी उत्तम मध्यम कनिष्ट होते हैं। बाप है ऊंचते ऊंच। पढ़ाई भी ऊंच ते ऊंच है। मर्तबा भी ऊंच ते ऊंच है। हिस्ट्री जागरफी तो झट जान जाते हो। बाकी याद की यात्रा में युध चलती है। असले= इसमें ही तुम हराते हो। हारकर भागन्ती हो जाते हो। ब तो नालेज भी भागन्ती हो जाती है। फिर जैसे थे वैसे ही बन जाते हैं। बाप के आगे चलन से देहअभिमान से झट प्रसिध हो जाता है। ब्राह्मणों की माला भी है। परन्तुकईयों को पता नहीं है कि हम कैस नम्बरवार यहां बैठें। देह अभिमान है ना। अच्छा बच्चों को गुडमोर्निंग और नमस्ते।